आई. सी. डब्ल्यू. ए. समाचार पत्रक
विश्व मामलों की भारतीय परिषद्, सप्रू हाउस, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली
अंक : ४ | जुलाई–सितम्बर, २०१५

सप्रू हाउस, नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम

महामहिम जेम्स एलिक्स मिशेल, सेशेल्स गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा १९ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान: २७ अगस्त २०१५

२७ अगस्त २०१५ को विश्व मामलों की भारतीय परिषद् में १९ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान आयोजित हुआ जहाँ सेशेल्स गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम जेम्स एलिक्स मिशेल ने 'मेरीटाइम सिक्यूरिटी फॉर ब्लू इकॉनमी' विषय पर व्याख्यान दिया। राष्ट्रपति के साथ इस अवसर पर उनके दो मंत्री जोएल मॉर्गन (विदेशी मामलों एवं परिवहन के मंत्री) तथा जीन पॉल एडम (वित्त, व्यापार और ब्लू इकॉनमी के मंत्री) भी शामिल थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक राजदूत श्री नलिन सूरी ने की।

परिषद् की प्रमुख उपलब्धियाँ

- महामहिम जेम्स एलिक्स मिशेल, सेशेल्स गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा १९ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान:
- फिलीपींस के सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम एंटोनियो टी. कार्पियो द्वारा १८ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान:
- अध्यक्ष महामहिम श्री मॉर्गन लाय्केतोफ्त द्वारा भाषण:
- विश्व मामलों की आस्ट्रेलिया संस्था और विश्व मामलों की जापान संस्था के मध्य द्विपक्षीय संवाद:
- 'इंडिया-म्यांमार रिलेसंस: चैंजिंग कोंतुर्स' पुस्तक का विमोचन:
- भारत-प्रशांत द्वीपीय सहयोग फोरम
- हिंदी में विदेश नीति जागरूकता कार्यक्रम, भोपाल
- हिंदी में विदेश नीति जागरूकता कार्यक्रम, भिवानी:

राष्ट्रपति मिशेल ने १९ वें सप्रू हाउस व्याख्यान को प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत और सेशेल्स हिन्द महासागर में दो पड़ौसी देश है। ये आपस में जुड़े हुए है और साझा हितों का निर्वहन करते है। उन्होंने सामुद्रिक खतरों के बारे में भी जिक्र किया और कहा कि भारत और सेशेल्स दोनों को समुद्री दस्यु जैसे उभरते हुए सामुद्रिक खतरों से सतर्क रहना चाहिए। इन चुनौतियों से निपटने के लिए दोनों देशों को हल निकालना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेशेल्स हर प्रकार के पारराष्ट्रीय अपराधों के खिलाफ भारत के साथ है। नीली अर्थव्यवस्था (ब्लू इकॉनमी) पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि 'आज अन्तर्राष्ट्रीय एजेंडे में बहस और कार्यवाही के रूप में नीली अर्थव्यवस्था एक महत्वपूर्ण घटक है। यह हिन्द महासागर और हिमतक्षेश के आर्थिक एजेंडे का ह्रदय स्थल है। यह अफ्रीकी संघ के एजेंडे २०६३ का अखंड हिस्सा है तथा साथ ही साथ संगठन की एकीकृत सामुद्रिक रणनीति है। यह २०१५ के बाद के विकास एजेंडे के संयुक्त राष्ट्र के नवीन विकास सम्पोषित लक्ष्यों का मूल तत्व भी है'। उन्होंने भारत और सेशेल्स के मध्य नीली अर्थव्यवस्था के समझौते पर हस्ताक्षर करने की बात का भी जिक्र किया, जो कि दोनों देशों के मध्य वैज्ञानिक और आर्थिक सहयोग के सम्बन्धों को ऊर्जा प्रदान करेगा।

राष्ट्रपति के पश्चात्, महामहिम एच ई मॉर्गन भारत सेशेल्स सम्बन्ध और नीली अर्थव्यवस्था पर अपने विचार प्रस्तुत किये। मंत्री ने अपनी बात भारत और सेशेल्स के ऐतिहासिक सम्बन्धों को लेकर शुरू की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सेशेल्स समुद्री दस्यु और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मार्च २०१५ में सेशेल्स यात्रा का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य शोध, नौपरिवहन, सामुद्रिक सुरक्षा और विभिन्न क्षेत्रों में क्षमता निर्माण आदि से सम्बंधित मुद्दों पर सुरक्षा संधि और समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए, जो कि आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं। इसके बाद उन्होंने सोमालिया में समुद्री दस्यु के बढ़ते हुए खतरे के बारे में बताया और कहा कि इसका प्रभाव सेशेल्स और क्षेत्र के अन्य पड़ौसी देशों पर भी पड़ रहा है। उनके अनुसार समुद्री दस्यु के मामले बढ़ने का मुख्य कारण पड़ौसी देशों के मध्य सामुद्रिक सहयोग का अभाव है। देशों के मध्य असहयोग तथा संस्थाओं की कमजोरी के चलते दस्यु इसका लाभ उठाते है और अपने ऑपरेशन चलाते है। उन्होंने इसके खिलाफ लड़ने के लिए संयुक्त ऑपरेशन चलाने पर बल दिया। इस दिशा में भारत के योगदान पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारत ने सेशेल्स को एक मानव रहित विमान मुहैया करवाया है तथा एक और अन्य विमान देने का वादा भी किया है।

सेशेल्स ने इसके अलावा हिन्द महासागर सुरक्षा व्यवस्था का हिस्सा बनने का आमंत्रण भी स्वीकार कर लिया है जिसमे भारत, श्रीलंका और मालदीव शामिल है। सुरक्षा के अतिरिक्त भारत और सेशेल्स तकनीकी सहयोग के मामलों में भी एक दूसरे से जुड़े हुए है। ब्ल्यू इकॉनमी का मुख्य उद्देश्य महासागर को बिना क्षति पहुंचाये आर्थिक लाभ को अधिकतम करना है।

अपने संबोधन में महामहिम जीन पॉल एडम ने कहा कि योग भारत द्वारा विश्व को एक उपहार है। भौगोलिक रूप से सेशेल्स १ प्रतिशत भूमि है और ९९ प्रतिशत समुद्र है। यह भौगोलिक क्षेत्र यहाँ की ९०, ००० जनता का पालन करती है। ब्ल्यू इकॉनमी पर मंत्री ने कहा कि इसे बिना सामुद्रिक सुरक्षा के हासिल नहीं किया जा सकता। ब्ल्यू इकॉनमी में शोध एवं अविष्कार की जरुरत है जिसके लिए भारत एक मंडी (हब) है और सेशेल्स इसमें सहायक हो सकता है। अपने देश के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि एक्सक्लूसिव इकोनोमिक जोन का ३० प्रतिशत क्षेत्र संरक्षण और समुद्री जीवों के लिए सुरक्षित रखा गया है। सेशेल्स के सकल घरेलु उत्पाद में मछली व्यवसाय दूसरे स्थान पर योगदान देता है। हाँलाकि उन्होंने अत्यधिक मछली दोहन के लिए भी चेताया। नीली अर्थव्यवस्था के वित्तीय पहलू पर बात करते हुए उन्होंने निवेशों की स्थापना और सम्पोषित वित्त की बात कही। उन्होंने ब्ल्यू बोंड और ऋण बाजार में निवेश की शुरुआत का भी जिक्र किया।

फिलीपींस के सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम एंटोनियो टी. कार्पियो द्वारा १८ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान: ६ अगस्त २०१५

६ अगस्त २०१५ को १८ वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान आयोजित हुआ जिसमे फिलीपींस के सर्वोच्च न्यायालय के महामहिम एंटोनियो टी. कार्पियो द्वारा "द साउथ चाइना सी डिस्प्यूट" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य सभा के सदस्य श्री एच. के. दुआ ने की।

अपने संबोधन में न्यायधीश कार्पियो ने कहा कि दक्षिणी चीन सागर विश्व के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है जैसा कि यहाँ के समुद्री मुहाने से ५.३ ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार होता है। चीन की नाईन डेश लाइन का जिक्र करते हुए उन्होंने यह तर्क दिया कि चीन अपने कृत्यों, नियंत्रण, घोषणाओं और दावों से सम्पूर्ण दक्षिणी चीन सागर पर अपने सार्वभौमिक अधिकारों को दर्ज करा रहा है। इस प्रकार यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विपरीत है और अन्य देशों के राष्ट्रीय हितों के भी विरुद्ध है। दक्षिणी चीन सागर के द्वीपों पर चीन के निराधार दावों को ख़ारिज करने के लिए मानचित्र और अभिलेखागार के पर्याप्त रिकोर्ड मौजूद है, महामहिम कार्पियो यह सिद्ध करते है कि चीन ने क्रमिक रूप से अपने क्षेत्र को बढ़ाया है क्षेत्र में भूमि पर बल जबरन दावा किया है। उन्होंने कहा कि इतिहास दक्षिण चीन सागर पर चीन के दावे को सिद्ध नहीं करता। न्यायधीश कार्पियो के अनुसार दक्षिण चीन सागर विवाद के दो आयाम है: भूमिगत और सामुद्रिक। उन्होंने तर्क दिया कि चीन इस क्षेत्र में न केवल भूमि पर अपना दावा जताता है वरन नाइन डैश लाइन द्वारा सम्पूर्ण सामुद्रिक क्षेत्र पर भी दावा जताता है। चीन द्वारा नाइन डैश लाइन तक सम्पूर्ण सामुद्रिक और भौगोलिक क्षेत्र पर नियंत्रण करने की स्थिति काफी संशयशील हो गयी है।

उन्होंने 'भूमि का समुद्र पर आधिपत्य' के सिद्धांत की पुष्टि करते हुए समुद्र और उसके संसाधनों पर नियंत्रण की वैधिकता पर ग्रोतियस शेल्डन की बहस का भी हवाला दिया। उन्होंने रेखांकित किया कि चीन द्वारा नाइन डैश लाइन की प्रमाणिकता के दावे से अन्तर्राष्ट्रीय कानून की अवहेलना हुई है। वर्ष २०१२ में वियतनाम के एक्सक्लूसिव इकोनोमिक जोन में तेल खनन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बोली लगाईं गयी और एकपक्षीय घोषित, काल्पनिक नाइन डैश लाइन के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में मछली पकड़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। प्रश्नोत्तर काल के सत्र में काफी मुद्दों पर बात हुई। जिसमे आसियान की भूमिका और फ्लीपिन्स के दावों पर अन्य दावेदारों के मध्य एक सहमति की सम्भावना, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के आदेश और अन्तर्राष्ट्रीय कानून को चीन द्वारा स्वीकार करने की सम्भावना आदि शामिल है। चर्चा में अन्य मुद्दों जैसे क़ानूनी झगड़ों जहाँ दो विवादित पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार अंततः शांतिपूर्ण तरीके से झगड़ों का निपटारा करने के लिए सहमत हुए, पर भी बातचीत हुई।

संयुक्त राष्ट्र की महासभा के ७० वें सत्र के चुने हुए अध्यक्ष महामहिम श्री मॉर्गन लाय्केतोफ्त द्वारा भाषण: ३१ अगस्त २०१५

३१ अगस्त २०१५ को आईसीडब्ल्यूए की मेजबानी में संयुक्त राष्ट्र की महासभा के ७० वें सत्र के चुने हुए अध्यक्ष महामहिम श्री मॉर्गन लाय्केतोफ्त द्वारा "यूएन एट ७०" विषय पर भाषण दिया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक राजदूत श्री नलिन सूरी ने की। अपने संबोधन में महामहिम श्री मॉर्गन लाय्केतोफ्त ने एजेंडा २०३० पर अपने विचार व्यक्त किये जो कि सम्पोषित विकास लक्ष्यों पर आधारित है। उन्होंने कहा कि जैसा कि संयुक्त राष्ट्र की महासभा के ७० वें सत्र के चुने हुए अध्यक्ष के तौर पर मेरे तीन वरीयताएँ है: १) विकास, पर्यावरण और वित्त के परिणामों का क्रियान्वयन, २) संयुक्त राष्ट्र की भूमिका एवं शांति तथा सुरक्षा के प्रदर्शन को मजबूत करना, ३) मानव अधिकार, जेंडर तथा विधि का शासन। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य वर्ष २००० में संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों द्वारा स्वीकार किये गए थे और काफी हद तक इसने अपने लक्ष्यों को प्राप्त भी कर लिया था। लेकिन अभी तक भी सम्पूर्ण तौर पर निर्धनता कम करने और विश्व में समता स्थपित करने में सफल नहीं हो पाया है। विश्व की जनसँख्या लगातार बढ़ती जा रही है और पिछले सत्तर सालों में यह तिगुनी हो गई है। लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए उपभोग और उत्पाद तरीकों में परिवर्तन करना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक गंभीर चुनौती है जो कि भविष्य में इस ग्रह को खतरे में डाल सकती है।

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों से निपटने के लिए विश्व को काफी ट्रिलियन डॉलर का भारी निवेश करना पड़ेगा। इस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों को एकजुट होकर प्रयास करने की जरुरत है। इसमें केवल राज्य ही नहीं वरन गैर राज्य कर्ता जैसे निजी व्यापारिक प्रतिष्ठान, गैर सरकारी संगठन एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जिन्हें एजेंडा २०३० के लक्ष्यों और सम्पोषित विकास लक्ष्य को पूरा करने हेतु भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं जैसे अमेरिका, चीन, भारत, यूरोपीय संघ आदि से आह्वान किया कि वे एजेंडा २०३० का समर्थन करे। उन्होंने यह भी इंगित किया कि ये बड़ी अर्थव्यवस्थायें स्वेच्छा से कार्बन उत्सर्जन में कटौती करेंगे।

एजेंडा २०३० के अलावा अध्यक्ष ने अन्य वैश्विक खतरों के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र अभी भी एक प्रासंगिक संगठन है। युद्ध की प्रकृति बदल रही है और इनकी संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। युद्ध के कारण कई समस्याएं पनपती है जैसे विस्थापन, प्रवर्जन और हिंसा। इन युद्धों के कारणों और परिणामों से निपटने के लिए इन्हें संयुक्त राष्ट्र के ७० वें सत्र के एजेंडे में शामिल किया गया है। उन्होंने सदस्य देशों से संघर्ष के क्षेत्रों में शांति और पुनर्स्थापित की प्रक्रिया में सहायता के लिए आह्वान किया। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि निः शस्त्रीकरण के मुद्दे पर भी सदस्य देश सहयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रतिवेदन को वितरित किया जायेगा और उस पर चर्चा की जाएगी।

संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् के विस्तार और भारत की सदस्यता के संदर्भ में अध्यक्ष ने कहा कि सदस्य देशों ने पहली बार इस मुद्दे पर बात की। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में जमैका के स्थाई प्रतिनिधि राजदूत कर्तेने रेतरे के नेतृत्व में सुरक्षा परिषद् में सुधार पर चल रही अंतर-सरकारी वार्तालाप के बारे में भी बताया।

भारत-प्रशांत द्वीपीय सहयोग फोरम: १९ से २१ अगस्त २०१५

विदेशी मामलों का मंत्रालय, भारत सरकार और विश्व मामलों की भारतीय परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से भारत-प्रशांत द्वीपीय सहयोग फोरम के लिए एक बैठक १९ से २१ अगस्त २०१५ को जयपुर में आयोजित की गई। विदेशी मामलों के मंत्रालय के राज्य मंत्री जनरल वी. के. सिंह ने फोरम की बैठक का उद्घाटन किया। आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व परिषद् के महानिदेशक राजदूत श्री नलिन सूरी ने किया। जनरल सिंह ने भारत और क्षेत्र के देशों के मध्य आपस में दोस्ती से परिपूर्ण सम्बंधो पर चर्चा की। उन्होंने भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नवम्बर २०१४ की सफल फिजी यात्रा एवं वहाँ क्षेत्र के अन्य नेताओं से मुलाकात करने की बात को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान सम्बंधो की भविष्य में मजबूत बनाये रखना होगा तथा आपसी हितों के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय और रचनात्मक ढंग से जुड़ने की जरुरत है। बैठक में श्री मुनु महावर जेएस (यूएनपी), एमईए, श्री ए के सांघी जेएस (माइग्रेसन) एनडीएमए तथा एडमिरल धीरेन विग द्वारा कुछ विषयों पर प्रस्तुतिकरण हुआ जिनमे मुख्यतः १) संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् में सुधार, २) भारत और द्वीपीय राष्ट्रों के मध्य सामुद्रिक सहयोग और ३) विभिन्न क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन और क्षमता निर्माण की संभावनायें थे। इस अवसर पर एक लघु फिल्म 'सोलर ममास ऑफ़ द पेसेफिक' को भी दिखाया गया।

विश्व मामलों की आस्ट्रेलिया संस्था और विश्व मामलों की जापान संस्था के मध्य द्विपक्षीय संवाद: १५-१७ सितम्बर २०१५

विश्व मामलों की भारतीय परिषद् (आईसीडब्ल्यूए) द्वारा विश्व मामलों की आस्ट्रेलिया संस्था (एआईआईए) और विश्व मामलों की जापान संस्था (जेआईआईइ) के मध्य द्विपक्षीय संवाद १५-१७ सितम्बर २०१५ को आयोजित करवाया गया। आईसीडब्ल्यूए, एआईआईए तथा जेआईआईइ तीनो संस्थाओं के मध्य आपसी हितों और समरूप क्षेत्रों पर त्रिपक्षीय संवाद हुआ। यह बातचीत परिषद् द्वारा महत्वपूर्ण संस्थाओं के साथ विकासशील और रचनात्मक जुड़ाव है जिसका लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय मसलों पर एक विद्वत राय बनाना है। प्रथम बार इस प्रकार की बातचीत एआईआईए तथा आईसीडब्ल्यूए के मध्य हुई जहाँ द्विपक्षीय सम्बन्धों की स्थिति, ज्ञान का साझा करना, एशिया में सुरक्षा के बदलते आयाम, प्रोद्योगिकी एवं परमाणु ऊर्जा और साथ ही साथ सामरिक और रक्षा सहयोग जैसे मुद्दों पर भी बातचीत हुई।जेआईआईइ के साथ हुए द्विपक्षीय संवाद का मुख्य केंद्र क्षेत्रीय आयामों के साथ साथ चीन, व्यापार, निवेश, आर्थिक सहयोग और ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा, सामुद्रिक और साइबर सुरक्षा, बहुपक्षीय संरचनाएं जैसे मुद्दे शामिल थे। तीनों संस्थाओं के मध्य हुए त्रिपक्षीय संवाद के दौरान एशियाई सुरक्षा ढाँचा, सभ्यताओं को मजबूत करना और मूल्यों को साझा करना, ऊर्जा सहयोग और तीनो संस्थाओं के मध्य हुए त्रिपक्षीय संवाद के भविष्य पर भी चर्चा हुई। आस्ट्रेलिया की और से राजदूत जोन मैककारथे के प्रतिनिधिमंडल में ४ सदस्य और भी थे, जापान के प्रतिनिधिमंडल में वहाँ के राजदूत के अलावा ६ सदस्य और भी थे तथा आईसीडब्ल्यूए के प्रतिनिधि राजदूत नलिन सूरी थे।

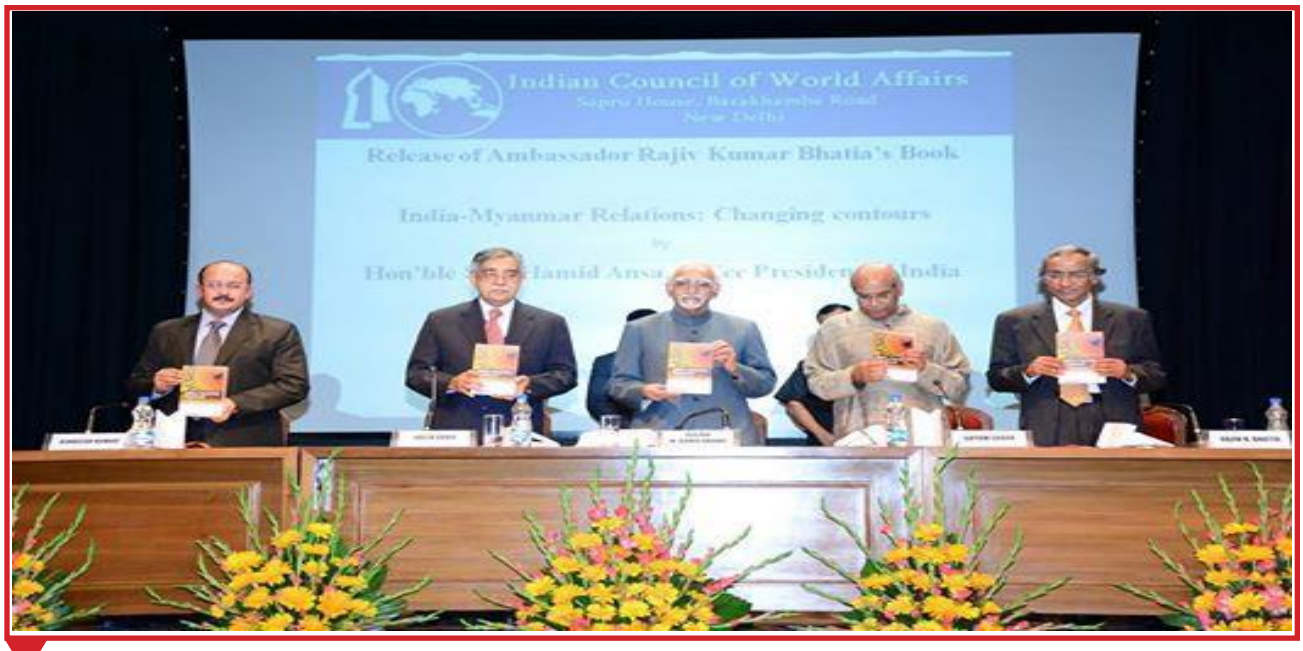

इंडिया-म्यांमार रिलेसंस: चेंजिंग कोंतुर्स' पुस्तक का विमोचन: २२ सितम्बर २०१५

राजदूत एवं आईसीडब्ल्युए के भूतपूर्व महानिदेशक श्री राजीव के भाटिया द्वारा लिखित पुस्तक 'इंडिया-म्यांमार रिलेसंस: चैंजिंग कोंतुर्स' का विमोचन २२ सितम्बर २०१५ को परिषद् में हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री हामिद अंसारी ने की।

पुस्तक पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि म्यांमार पर गंभीर शोध की कमी है बल्कि भारत के लिए यह काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि राजदूत राजीव भाटिया की पुस्तक एकदम सही समय पर आई है जो कि इस रिक्तता की पूर्ति करती है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि 'हमारे उत्तर पूर्व क्षेत्र से निकटता तथा म्यांमार की भौगोलिक अवस्थिति के अतिरिक्त महत्वपूर्ण बात यह है कि ये देश हमारे और दक्षिण पूर्वी एशिया के मध्य एक पाइपलाइन का काम करता है। हम एक दूसरे के साथ सुरक्षा हित भी साझा करते है, इसलिए हम चाहते है कि म्यांमार में स्थिरता और शांति बनी रहे'।इस पुस्तक को भारत द्वारा वर्तमान म्यांमार नीति के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए राजदूत श्री श्याम शरण ने इस पुस्तक आमुख लिखा। जिसमे कहा कि म्यांमार अभी बहुत बड़े सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन से गुजर रहा है।

इस परिवर्तन में सरकार और लड़ाकों के मध्य युद्ध विराम का भविष्य, सैन्य नेतृत्व की भूमिका, आंग सां सु की का दल नेशनल लीग, आगामी चुनावों का रुख, मुख्य पड़ौसी देशों की भूमिका जैसे चीन, आदि बातों का उत्तर इस पुस्तक में है। कैसे भारत की नीति इन घटकों से सामंजस्य बैठती है, यह वर्णन इस किताब में है। पुस्तक पर अपने विचार साझा करते हुए राजदूत श्याम शरण ने भारत म्यांमार सम्बंधो पर अभी तक के विकास क्रम पर भी टिप्पणी की है।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद् में नये महानिदेशक के रूप में राजदूत श्री नलिन सूरी की नियुक्ति: राजदूत नलिन सूरी (आईएफएस १९७३) ने आईसीडब्ल्यूए में २४ जुलाई, २०१५ को महानिदेशक पद पर कार्यभार संभाला। राजदूत सूरी ने भारत के राजदूत के रूप में पोलेंड एवं चीन में तथा हाई कमिश्नर के रूप में यूके में सेवायें प्रदान की। इन्होने सचिव के तौर पर विदेश मंत्रालय में भी अपनी सेवाएं दी है।

हिंदी में विदेश नीति जागरूकता कार्यक्रम, भोपाल: २८ जुलाई २०१५

२८ जुलाई २०१५ को विश्व मामलों की भारतीय परिषद् और अटल बिहारी हिंदी विश्विद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में 'भारतीय विदेश नीति: चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आई सी डब्ल्यू ए की तरफ से प्रतिनिधित्व डॉ राकेश कुमार मीना ने किया। यह कार्यक्रम परिषद् की ओर से वर्ष २०१४ में हिंदी में विदेश नीति जागरूकता की पहल पर आयोजित करवाया गया। इस संगोष्ठी में बड़ी संख्या में अकादमिक संकाय, छात्र और मीडियाकर्मी शामिल हुए।

हिंदी में विदेश नीति जागरूकता कार्यक्रम, भिवानी: १९-२० सितम्बर, २०१५

१९-२० सितम्बर २०१५ को विश्व मामलों की भारतीय परिषद् और जीडीसी मेमोरियल कालेज, भिवानी के संयुक्त तत्वाधान में 'भारतीय विदेश नीति: चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आई सी डब्ल्यू ए की तरफ से प्रतिनिधित्व डॉ ध्रुव ज्योति भट्टाचार्जी ने किया। यह कार्यक्रम परिषद् की ओर से वर्ष २०१४ में हिंदी में विदेश नीति जागरूकता की पहल पर आयोजित करवाया गया। इस संगोष्ठी में बड़ी संख्या में अकादमिक संकाय, छात्र और मीडियाकर्मी शामिल हुए।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद् के बारे में

विश्व मामलों की भारतीय परिषद एक थिंक टैंक के रूप में भारतीय बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा 1943 में स्थापित किया गया था। यह सोसायटी अधिनियम 1860 के पंजीकरण के अंतर्गत एक गैर सरकारी, गैर राजनीतिक और गैर लाभकारी संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा, विश्व मामलों की भारतीय परिषद को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है। भारत के उपराष्ट्रपति आईसीडब्ल्यूए के पदेन अध्यक्ष हैं। परिषद् शोध संकाय के आंतरिक वैचारिक मंथन और बाहरी बुद्धिजीवियों के सहयोग से नीतिगत शोध निर्मित करती है। परिषद् नियमित रूप से सेमिनार, गोलमेज सम्मेलन, व्याख्यान, परिचर्चा आदि का आयोजन करवाती है। यहाँ एक प्रतिष्ठित पुस्तकालय है, और इंडिया क्वाटर्ली जैसे जरनल/मैगजीन का प्रकाशन होता है। इसका एक अपना अलग वेब साइट है। यह परिषद् अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर भारत की भूमिका को प्रदर्शित करती है और अन्य विदेशी थिंक टैंकों के साथ संवाद स्थापित कर ट्रैक टू के लिए मंच तैयार करती है।

आई सी डब्ल्यू ए द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक, सप्रू हाउस, बाराखम्बा रोड़, नई दिल्ली – ११०००१
वेबसाईट: http://www.icwa.in; दूरभाष नं. 011-23317246 फैक्स नं. 011-23310638

दिशा निर्देशक
राजदूत नलिन सूरी, महानिदेशक, विश्व मामलों की भारतीय परिषद्, सप्रू हाउस, नई दिल्ली.

संपादक
श्री अनवर हलीम
भारतीय विदेश सेवा
संयुक्त सचिव, आईसीडब्ल्यूए.

सहायक संपादक
डॉ पंकज झा, निदेशक (शोध), आईसीडब्ल्यूए व डॉ राकेश कुमार मीना, अनुसंधान अध्येता, आईसीडब्ल्यूए.